जीवन-दृष्टि में रोवरिंग/रेंजरिंग

वर्तमान भौतिकवादी एवं तकनीकी युग में युवाओं में राष्ट्रीयता की भावना का विकास तथा उनको भारतीय संस्कृति के सार्वभौमिक समावेशी तत्वों के प्रति आग्रही बनाने में सामूहिक सहभागिता के अवसरों के संयोजन का अमूल्य योगदान है। मेरा मंतव्य है कि रोवरिंग गतिविधियों के माध्यम से युवाओं को अधिकाधिक सभ्य, संकल्पित, सुदृढ़ और अनुशासित बनाया जा सकता है। रोवरिंग में संचालित गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य युवाओं में एकात्मकता का संस्कार उत्पन्न करना होता है। इस संगठन द्वारा विद्यार्थियों को सेवाभावी और सद्चरित्र बनाये जाने की भी शिक्षा दी जाती है। **विद्यार्थी अपने जीवन में जो शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण करते हैं उसी के आधार पर उनके भावी व्यक्तित्व का निर्माण होता है जिससे वे समाज व राष्ट्र को सर्वोपयोगी नागरिक के रूप में अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान दे सकें।**

पूर्वमाध्यमिक स्तर पर मैं भी एक स्काउट रहा हूँ। वो गाठें, बन्धन, प्राथमिक सहायता, कम्पास व नक्शे का ज्ञान, खोज के चिह्न व विभिन्न प्रकार के खेल आज भी मेरे स्मृति-पटल पर अंकित है। **स्काउटिंग की ही देन है कि मैं आज पठन-पाठन के साथ-साथ अन्य सहयुक्त क्षेत्रों में भी अपनी सेवाएँ देने में अपने आप को समर्थ पा रहा हूँ।** रोवरिंग/रेंजरिंग स्काउटिंग का उच्च-स्तर है। फायर-फाइटिंग, गाठें व बन्धन, रोल प्ले, किमगेम, सैन्डस्टोरी आब्जर्वेशन, कैम्पिंग, हाइकिंग, क्रू/टीम का काउन्सिल आदि इसके ऐसे कार्यक्रम हैं जो बालक-बालिकाओं के स्वास्थ्य के साथ-साथ मन-मानस को खोलने के साथ ही विभिन्न प्रकार के कौशल ज्ञान में वृद्धि तथा प्रेक्षण की क्षमता में अभिवृद्धि करने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।

स्काउटिंग फार ब्यायज, रोवरिंग टू सक्सेज और रेंजर्स हैण्ड बुक ऐसी पुस्तकें है जो व्यक्ति को सफलतम जीवन जीने की कला का ज्ञान कराती है। **व्यक्ति आशावादी बनता है और स्वयं को हमेशा क्रियाशील रखता है। क्रियाशील व्यक्ति कभी अस्वस्थ नहीं रहता है और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।**

हमें विश्वास है कि **रोवर/रेंजर की 'दिग्दर्शिका' सर्वोत्तम गुणों के निर्माण में एवं सभी रोवर्स/रेंजर्स के कार्यक्रम के संचालन में पाथेय का कार्य करेगी।**

प्रोफेसर (डॉ.) रविशंकर सिंह
अधिष्ठाता, छात्र-कल्याण एवं आचार्य, भौतिकशास्त्र
विशेष कार्याधिकारी, महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर